Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 04, October, 2017, pp. 343-347

भास के नाटकों में समेकित विवेचना

डॉ0 सूर्यनारायण गौतम*
सुनीता**

शोध सार

भासीय नाटकों की शैली में व्यञजकता तथा प्रभावोत्पादकता का मणि–काञचन संयोग है। लघु वाक्यों में गंभीर तथा रसपेशल भावों की व्यंजना के कारण अपनी विशिष्ट महत्ता रखती है। दुरूह तथा दीर्घविस्तारी समस्त पदों की संघटना भले ही काव्य के लिये शोभाकर बताई गई हो, पर नाटक में लघुविस्तारी एवं सरल वाक्यों की महत्ता अक्षुण्ण है। इस दृष्टि से भास सफलता के शिखर पर दिखाई पड़ते हैं। इनकी भाषा एवं शैली से स्पष्ट लक्षित होता है कि प्राचीनकाल में संस्कृत अवश्य ही लोक व्यवहार की भाषा रही होगी। छोटे–छोटे वाक्यों को लोकोक्तियों तथा सूक्तियों से अलंकृत करना भास की शैली का गुण है। प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत धर्म, दर्शन, भाषाशैली, काव्यशास्त्रीय वस्तु आदि का विवेचन किया जाना अपेक्षित है।

अलंकारविहीन सरल भाषा यदि भावव्यंजना में सफल रहे तो यह कवि की महती विशेषता होगी। भास के नाटकों में हमें यही विशेषता लक्षित होती है। प्रभावमयी सरल भाषा भावों की अभिव्यक्ति में इतनी समर्थ है कि दर्शक के हृदय को हठात् आकृष्ट कर लेती है। भास की शैली की विशिष्टता उनके कथनोपकथनों में देखी जाती है। कथनोपकथन में इनके पात्र नितान्त विदग्ध हैं। उक्ति–प्रत्युक्ति की विदग्धता के लिये प्रतिज्ञा–यौगन्धरायण में यौगन्धरायण तथा भरतरोहक के संवादों में देखी जा सकती है। भरतरोहक जिन आक्षेपों को उदयन पर लगाता है उनकी बड़ी बारीकी से यौगन्धरायण उत्तर देता है। उक्ति–प्रत्युक्तियों के बीच कहीं–कहीं ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ टपक पड़ती हैं जो नाटकीय रसचर्वणा में अतीव मिठास ला देती हैं। उदाहरण के लिये प्रतिज्ञा नाटक में जब महासेन अपनी स्त्री से वासवदत्ता के वर के विषय में विमर्श कर रहा है, उसी समय क०चुकी सहसा प्रवेश कर उदयन का नाम लेता है। यह उक्ति पाठकों और दर्शकों के हृदय को सहसा झकझोर देती है। ऐसी आकस्मिक उक्तियाँ भास की अपनी विशेषताओं के रूप में हैं और अन्य नाटकों में भी इनकी सम्यक् उपलब्धि होती है।

भास अपने वर्ण्य–विषयों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ पेश करते हैं। विषय या दृश्य का वर्णन करते समय उसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश को भी वे उपस्थापित कर देते हैं। दरिद्र–चारुदत्त नाटक में दरिद्रता का वर्णन जितना स्वाभाविक है उतना ही बारीक भी। सुख को दुःख के बाद प्राप्त होना चाहिये, यह भास को अच्छी तरह विदित था। सुखावस्था के बाद दुःख आना मरण–तुल्य ही है। इस वर्णन को देखकर पाठक भास की शैली की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। यदि किसी दृश्य का वे वर्णन करने लगते हैं तो इतनी स्पष्टता के साथ उसे उपस्थित करते हैं कि पाठक को पूर्ण बिम्बग्रहण हो जाता है। यह कवि वा नाटककार की चरमसिद्धि है। उदाहरणार्थ, सन्ध्या का वर्णन यथा–

* एसोसिएट प्रोफेसर–संस्कृत, श्री जे. जे. टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनू, राजस्थान।.
** शोध छात्रा–संस्कृत विभाग, श्री जे. जे. टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनू, राजस्थान।

पूर्वां तु काष्ठा तिमिरानुलिप्ता
सन्ध्यारुणा भाति च पश्चिमाशा।
द्विधा विभक्तान्तरमन्तरिक्षं
यात्यर्थनारीश्वररूपशोभाम्।।[1]

और–

खगा वासोपेता सलिलमवगाढो मुनिजनः
प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरति धूमो मुनिवनम्।
परिभ्रष्टो दूराद्रविरपि च संक्षिप्तकिरणो
रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।[2]

इसी प्रकार कृष्ण–रात्रि का वर्णन भी हृदयहारी है–

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञजनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्निष्फलतां गता।।[3]

अविमारक में मध्यरात्रि का वर्णन यथा –

तिमिरमिव वहन्ति मार्गनद्यः
पुलिननिभाः प्रतिभान्ति हर्म्यमालाः।
तमसि दशदिशो निमग्नरूपाः
प्लवतरणीय इवायमन्धकारः।।[4]

इसी प्रकार वनवर्णन, मध्याह्नवर्णन, तारुण्यवर्णन इत्यादि में भास की सफलता देखी जा सकती है। भास सरल पद्धति के जनक हैं। शास्त्रीय दृष्टि से इनकी भाषा प्रसादगुण से संयुक्त है। रसपेशलता, भावों की सम्यक् अभिव्यक्ति, मनोरञजकता, गम्भीरता, औदात्य तथा माधुर्य–इनकी शैली के गुण हैं। अवस्था तथा पात्र के अनुसार उग्रता एवं संयम का प्रयोग इनके नाटकों की विशेषता है। हास्य की सम्यक् संयोजना भी इनकी शैली की सफलता का एक कारण है। स्वप्नवासवदत्ता का विदूषक यदि यह नहीं जानता कि राजा का नाम ब्रह्मदत्त है या नगर का, तो चारुदत्त का प्रतिनायक शकार उससे भी घोर मूर्ख निकलता है। इनकी उक्तियाँ रससिद्धि में सहायक होती हैं।

वाक्यसंघटना की विशेषता भी भास की निराली ही है। इसकी प्रशंसा महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री ने मुक्तकण्ठ से की थी। उनके अनुसार भास की शैली की तुलना अन्य किसी कवि से नहीं की जा सकती। चरित्र–चित्रणों में भास ने इतनी सफलता प्राप्त की है कि पात्रों में काल्पनिकता का भान तक नहीं होता। इनकी भाषा शैल–निर्झरिणी की भाँति बिना किसी तड़क–भड़क के स्वाभाविक गति से प्रवाहित होती है। भास भारतीय वृत्ति के महनीय आचार्य हैं। शब्दार्थ–योजना में अभिव्यञजना का प्रश्रय आकर्षक लगता है। भाव, रस, देशकाल एवं पात्रों के अनुसार भाषा में परिवर्तन दिखायी पड़ता है।

भास की शैली में कृत्रिमता नहीं, स्वाभाविकता है। इसमें ऊहा की अपेक्षा नहीं। पाठकों को सामान्य बुद्धि के प्रश्रय से ही चरम आनन्द की अनुभूति होती है। ओज तथा प्रसादगुणभूयिष्ठा इनकी भाषा माधुर्य से ओत–प्रोत है। लोग ओज तथा समासबाहुल्य को गद्य का जीवन बताते रहे पर, भास के लिये समास–विहीन भाषा भी गद्य की उच्च कक्षा में विराजमान हो सकती है। इनके गतिशील प्रवाह में कहीं भी गतिरोध नहीं और न तो तोड़–फोड़ ही है। सरल, स्वच्छन्द गति है। इनकी शैली की आलङ्कारिकता में आस्था नहीं है अपितु, रसाभिव्यक्ति और भावव्यञजना को यह प्रधान मानकर चलनेवाली है। भास की सरल शैली को कुछ लोगों ने रामायणीय प्रभाव माना है।

भास की शैली की प्रशंसा महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री ने बड़े ही प्रशस्त शब्दों में की है। उनके अनुसार इन नाटकों की शैली अद्वितीय है।[5] भास की सरल शैली का कारण उस पर काव्यों की शैली का प्रभाव है। शैली प्रवहण–शील तथा प्रभावुक है। उद्दाम भावनाओं का बड़ा ही सशक्त वर्णन किया गया है। विपत्तियों के चित्रण में भास सिद्धहस्त हैं। नाटकों की अभिनेयता पर भास की दृष्टि थी इसीलिये कृत्रिमता तथा आलङ्कारिकता का अभाव दिखायी पड़ता है। अलंकरण यद्यपि काव्य के लिये आवश्यक होता है पर, नाटक में यह उसकी अभिनेयता का विधायक होता है। इसी कारण भास के नाटकों में अलंकरण का प्राचुर्य नहीं है।

भास की शैली के तीन गुण हैं– प्रसाद, ओज और माधुर्य। ये तीनों गुण उनके नाटकों में सर्वत्र दृष्टिगत हो सकते हैं। अवस्था तथा साम्य के अनुसार उनकी शैली में सहसा मोड़ आता है जिससे प्रभावशालिता एवं व्यञजकता में वृद्धि होती है। अपने भावों की व्यञजकता में भास इतने सिद्ध हैं कि कहीं भी विवक्षित भाव दब नहीं सकता। सीमित शब्दों एवं सरल भाषा के द्वारा विवक्षित अर्थ का उद्बोध, भास की महती विशेषता है।

भास की शैली का गुण मौन भाषण भी है। अल्प शब्दों के द्वारा अधिकाधिक भावों की व्य०जना के अतिरिक्त मौन से भी अर्थबोध कराया गया है। ये तीन शब्दों से कहीं अधिक प्रभावशाली हुये हैं एवं रस तथा भावों की प्रतीति में सहायक हुये हैं। इसी कारण समीक्षकों ने उन्हें 'मौन के आचार्य' विशेषण से विभूषित किया है।

भास की शैली के अपने विशेष गुण हैं। परवर्ती कवियों और नाटककारों पर इसका प्रभाव पड़ा है, फिर भी वह अपना पार्थक्य स्थिर रखे और अपनी महत्ता को संजोये हैं।

भास की नाट्यकला की सफलता में पात्रों के चरित्र–चित्रण का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। भास ने सभी प्रकार के पात्रों का चरित्र–चित्रण बड़ी ही कुशलता के साथ किया है। इन नाटकों में जितने प्रकार के पात्र मिलते हैं, संस्कृतनाट्यसाहित्य में कदाचित् ही किसी नाटककार को इनके पात्रों से सरोकार पड़ा हो। प्रोज्ज्वल चरित्र के धीरोदात्त नायक, धीरोद्धत, धीरललित, खल, देवी, आसुरी जितने भी प्रकार के नाटकीय पात्रों की सम्भावना की जा सकती है, वे सभी यहाँ उपलब्ध हैं। बाण ने भास के नाटकों को 'सूत्रकृतारम्भैनिटिकैः बहुभूमिकैः', कहा है। इसका आशय यह है कि भास के नाटकों में बहुत से पात्रों का समावेश हुआ है। बाणभट्ट का यह कथन अक्षरशः सत्य है। पर, यह बात विशेष महत्त्व रखती है कि इतने अधिक पात्रों के होने पर भी एक भी पात्र अधिक नहीं। इन नाटकों के कथानक में ऐसा कहीं भी आभास नहीं होता कि अमुक पात्र की आवश्यकता नहीं है।

भास के नाटकों में पात्रों की संख्या तथा उनमें विविधता जिस प्रकार दिखाई देती है उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। इतने अधिक पात्रों का समावेश भास के द्वारा केवल एक वर्ग से नहीं किया है। उनके द्वारा उपयुक्त स्थान पर पशु–पक्षी तक पात्र–कोटि में लाये गये हैं। यद्यपिइ न सबके रहते हुए भी उन्होंने मुख्य रूप से मानवों को ही पात्र बनाया है किन्तु इसमें भी यह विशेषता रही है कि, उन्होंनें मानवों में केवल एक ही वर्ग या जाति के पात्र नहीं बनाये हैं, अपितु सभी स्तरों के पात्र यहाँ दिखायी पड़ते हैं। इन पात्रों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता हैः–

(1) देवता–राम, कृष्ण, बलराम, इन्द्र, अग्नि आदि।

(2) यक्ष आदि–विद्याधर।

(3) देवपत्नियाँ–सीता, कात्यायनी आदि।

(4) राक्षस–रावण, विभीषण, कंस, घटोत्कच आदि।

(5) राक्षसियाँ–हिडिम्बा।

(6) राजा–धृतराष्ट्र, दशरथ, शल्य, शकुनि, दुर्योधन आदि।

(7) रानियाँ–कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, गांधारी, पौरवी आदि।

(8) राजकुमार–दुःशासन, दुर्जय आदि।

(9) राजकुमारियाँ–दुःशला, कुरङ्गी आदि।

(10) अमात्य–यौगन्धरायण, रुमण्वान्, शालंकायन, भरतरोहक, सुमंत्र आदि।

(11) विदूषक–वसन्तक, मैत्रेय आदि।

(12) वीर–कर्ण, अविमारक, लक्ष्मण, भीष्म, द्रोण, अर्जुन आदि।

(13) का०चुकीय–बादरायण, बालाकि आदि।

(14) सन्देशवाहक–हंसक।

(15) वानर–हनुमान, अंगद, सुग्रीव, बालि आदि।

(16) धात्री–वसुन्धरा, विजया आदि।

(17) विद्यार्थी–स्वप्ननाटक के प्रथमांक में लावाणक से नगर आने–वाला ब्रह्मचारी।

(18) मल्ल–चाणूर और मुष्टिक।

(19) चोर–सज्जलक।

(20) जुआरी–संवाहक।

(21) खल–शकार।

(22) वारवनिता–वसन्तसेना।

(23) नाग–कालिय।

(24) पशु–अरिष्टवृषभ, गरुड़, जटायु।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पात्रों का वर्गीकरण बहुत विस्तृत है। जिस–जिस वर्ग के पात्रों की भास ने उद्भावना की है उनमें तत्तद् गुणों का विन्यास भी बड़ी सफलता के साथ किया है और यही कारण है कि बाणभट्ट जैसे महाकवि को भी भास के पात्र–बाहुल्य की प्रशंसा करनी पड़ी। उन्होंने यह भी स्पष्ट कह दिया कि भारतीय नाटकों के प्रथित होने का एक कारण पात्र–बाहुल्य भी है। इन पात्रों के चरित्र–विन्यास में भास ने बड़ी ही सतर्कता तथा कुशलता प्रदर्शित की है। यदि देवबर्ग का पात्र है तो उसमें देवत्व का पूर्णतः समावेश किया गया है। उसमें कोई भी ऐसी बात नहीं आने दी गई है जो उसके स्वाभाव के विपरीत पड़े। प्रयत्न तो यह किया गया है कि उसके असदंश को भी निकालकर उसे नितान्त परिष्कृत रूप में प्रदर्शित किया जाय। इसी भांति यदि दानव–वर्ग का पात्र है तो उसमें दानवोचित सभी दोष–गुणों को प्रदर्शित किया गया है। कंस, घटोत्कच, हिडिम्बा के चरित्र को उदाहरण रूप में उपन्यस्त किया जा सकता है। भास ने यह भी प्रयास किया है कि पात्रों के अशिष्ट आचरण को इस मनोवैज्ञानिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जाय कि पाठकों की उस पर सहानुभूति हो जाय। उदाहरण के लिए घटोत्कच के चरित्र को देखिये। माता की आज्ञावश यद्यपि वह ब्राह्मण को पकड़ता है, फिर भी उसका मन उसे कोसता है। चारुदत्त में सज्जलक भी यद्यपि चोरी करता है पर, उसकी अन्तरात्मा इस कार्य के लिये गवाही नहीं करती।

पात्रों के चरित्र को उत्कृष्ट दिखाने के लिये भास को लोक–प्रसिद्ध कथानकों में भी परिवर्तन कर देना पड़ा है। पर इस कार्य में उन्हें जरा भी संकोच नहीं हुआ है। उदाहरण के लिये कैकेयी के चरित्र को ले लीजिये। पाठकों को यह पूर्वविदित है कि कैकेयी ने अपनी अल्पज्ञता और अदूरदर्शितावश राम का वनवास माँगा। पर भास ने यहाँ दूसरा ही कारण उपस्थित कर कैकेयी के कलंक को शमित या कम करने का प्रयास किया है। यहाँ यह दर्शाया गया है कि कैकेयी ने भरत को राज्य देने के लिये नहीं अपितु, ब्राह्मण का शाप सत्य करने के लिये राम के लिये वनवास का वर माँगा। वह भरत का वनवास भी माँग सकती थी पर, उसे यह बात विदित थी कि भरत का वियोग सहते–सहते राजा दशरथ उसके अभ्यस्त हो

गये थे अतः उनके वियोग से वह नहीं मर सकते इसीलिये उसने राम का वनवास माँगा। वनवास भी वह चौदह दिनों के लिये माँगना चाहती थी, पर मानसिक असन्तुलन के कारण की कल्पना द्वारा प्रसूत है। पर, सिर्फ अपनी पात्रभूता कैकेयी के चरित्रोत्कर्ष के लिये उन्होंने ऐसा परिवर्तन कर डाला। इसीलिये हम देखते हैं कि उन्होंने पात्रों के चरित्र–विन्यास में बड़ी सहानुभूति तथा कुशलता से काम लिया है।

संदर्भ स्रोतः–

1 अविमारक 2/12

2 स्वप्नवासवदत्तम् 1/16

3 चारुदत्त 1/ 19।

4 अविमारक 3/ 4।

5 The superior excellence of sentences which are not subject to the restriction of verification is everywhere to be observed in these Rupakas. It really surpasses in grandeur, the style of other works in incomparable.

❑❑❑